भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-7, वार्षिक अंक	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00
मंगलवार, 25 दिसं.' 84	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 1.00

['भगवत्कृपा' का आखिरी अंक आपको नवं.' 83 में मिला होगा....तब से आज तक....? वास्तव में इस दौरान सत्संग का विस्तार व और प्रवृतियों में प्रवृत्त रहने के कारण आपकी सेवा हम 'भगवत्कृपा' के माध्यम से नहीं कर पाये। प्रभु के प्रगट स्वरूपों की अमृतवाणी, कथावार्ता और गुणातीत समाज के क्रियाकलापों की जानकारी आप तक नहीं पहुँच पाई....इसके लिये हम क्षमा चाहते हैं। गत कई मास से देश भी जो कुछ हालातों से गुजर रहा है वह भी पत्रिका की गति में विलम्बित होने का कारण बना है। लेकिन नूतन वर्ष में एक नये प्रकाश, मार्गदर्शन सहित पत्रिका का पुनः प्रकाशन इस अंक से प्रारंभ हो रहा है। हमें विश्वास है कि अब पत्रिका नियमित रूप से हर मास प्रकाशित होती रहेगी। आप सभी के सहयोग, सद्भाव की आशा रखते हैं....भगवत्स्वरूप प्रगट प्रभुस्वरूपों द्वारा 'भगवत्कृपा' हम सभी पर सदैव अवतरित होती रहे....यही प्रभु के चरणों में दिल की प्रार्थना....जय श्री स्वामिनारायण।]

यह प्रार्थना की क्षण है.....

दिनांक 31 अक्तूबर, 1984 बुधवार के दिन ऐसी भयंकर अनहोनी दुर्घटना हो गई जो कि किसी की कल्पना में भी नहीं थी। भारत की प्रधानमंत्री प्रजाप्रिय, प्रियदर्शिनी श्रीमती इन्दिरा गांधी पर अंधाधुंध गोलीबारी हुई। स्वयं रक्षक ही भक्षक बन गये और एक महान् आत्मा हम सब के बीच से हमेशा के लिए विदा हो गई। इस अचानक हुए हादसे से सारे देश में सन्नाटा सा छा गया। विश्व में चारों ओर व्यग्रता बढ़ गई। सब शून्य हो गये। इस दुःखद दायरे (ट्रेजडी) से हम बाहर भी नहीं आये थे और सारे देश में उपयुक्त हत्या की प्रतिक्रिया के रूप में अनेक लोगों की और विशेषकर निर्दोष लोगों की हत्यायें होने लगीं। काफी जान-माल की क्षति हुई और एक अविश्वास की हवा चारों ओर चल पड़ी...यह सही है कि सरकार ने अपने कड़े शासन से हिंसक प्रवृत्तियाँ रोक दी, किन्तु मनुष्य के हृदय से जब तक वैर की भावना नष्ट नहीं होगी, जब तक आपस में प्रेम भावना जाग्रत नहीं होगी तब तक सम्पूर्ण शान्ति असंभव है। **केवल धारण की हुई दिव्य विभूतियाँ ही इस असंभव को संभव करने में समर्थ**

हैं।

किसी धर्म ने कभी वैर का उपदेश नहीं दिया है। किसी महात्मा ने हिंसा को धर्म का शास्त्र नहीं बनाया। शास्त्रों, वेदों ने कभी भी हिंसा का पाठ नहीं पढ़ाया। लेकिन प्रेम से हृदय-परिवर्तन करके अज्ञान रूपी अंधेरे को नष्ट करना सिखाया है। समय अविरत गति से दौड़ रहा है। एक क्षण भी विराम नहीं कर रहा। इससे अधिक दौड़ हमें पवित्र व निर्मल संतों की छत्रछाया लेकर लगानी है–अधिक सतर्क और जाग्रत होकर।

भगवान स्वामिनारायण के अनुयायी केवल एक जाति के नहीं थे। आज भी नहीं हैं। हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सब भगवान के अनुयायी है। आज उन भगवान स्वामिनारायण के अखंड धारक प्रकट ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के उपदेश हैं–'सहृदयी बनना और बनाना'। वैर0-विष, ईर्ष्या, मान, हठ, ममत्व, काम, क्रोध, लोभ आदि से विरुद्ध सहृदयी आचरण सर्वजनों में हो इसके लिए अत्यंत कठोर परिश्रम करके ये तीनों विभूतियाँ सतत् समग्र भूमंडल का दौरा कर रही हैं और बिना भेदभाव निःस्वार्थ भाव से प्रेम का पौधा हरेक के दिल में सींच रही हैं। इनकी महिमा के बारे कहने वाणी मौन है। एक अविरल करुणा स्रोत निरन्तर बह रही है।

स्वामिनारायण धर्म में अहिंसा का अत्यधिक महत्व है। स्वयं स्वामिनारायण भगवान ने इस पर काफी जोर दिया है। स्वामिनारायण भगवान जब नीलकंठ वर्णी के रूप में विचरण करते थे तब किसी और साधुओं ने उनको जंगल से चौलाई की हरी सब्जी काट कर लाने को कहा। नीलकंठ वर्णी ने स्पष्ट शब्दों में उत्तर दिया ''उसमें भी जीव है, मैं वह काट कर नहीं लाऊँगा''। कैसी सहिष्णुता ! कैसी निर्भीकता ! अन्तर में हिंसा के प्रति कैसी घोर घृणा ! सब्जी हो या भेड़-बकरी, खाने के लिये हो या धर्मकार्य के लिये, स्वामिनारायण भगवान ने कभी धर्म के नाम पर भी हिंसा करने की सम्मति नहीं दी। उनके शब्द स्पष्ट हैं ''कत्ल करने से भगवान कैसे प्रसन्न हो सकते हैं?'' सारी सृष्टि भगवान की संतति है। स्वामिनारायण भगवान की अमृतवाणी है–''क्या बच्चों की हत्या करने से पिता खुश हो सकता है? माँ खुश हो सकती है?'' और कहा है कि ''प्रत्येक शास्त्र अहिंसा का समर्थन करता है, हिंसा का नहीं।'' महाराज को जड़ और चेतन दोनों के प्रति प्रेम था। फिर वह बैल हो या मनुष्य, पुरुष हो या स्त्री, एक धर्म को मानने वाला हो या अन्य धर्म को। स्वामिनारायण भगवान मानते थे कि धर्म के नाम से हिंसा करना बड़ा भयंकर पाप है।

जिस प्रकार से महान् आत्मा की हत्या हुई है वह अत्यंत घृणित है, किन्तु इसके कारण बदले की भावना से और निर्दोष हत्यायें करना वह और भी अधिक घृणास्पद है। किसी भी प्रकार से किसी की हत्या करना गलत है। सृष्टि का निर्माता प्रभु है। दण्ड देना उसका अधिकार है। तीनों लोकों के सम्राट के पास हमारी हस्ती क्या? वर्तमान परिस्थितियों में दूषित वातावरण को देख कर लगता है कि मानवता पर पशुता खूब तेजी से अग्रसर हो रही है। जब कि मानव स्वरूप में विचरण करती प्रगट ब्रह्मस्वरूप विभूतियों का उद्देश्य मानव को सामान्य कक्षा से ऊपर उठकर दिव्यता में पलटना है। हठ, मान, ईर्ष्या, क्रोध और मोह के अंधेरे को छोड़ कर दिव्यता के आलोक में प्रवेश करना ही धर्म है। यही है स्वामिनारायण धर्म का दिव्य संदेश और प्रगट स्वरूपों की हम पर करुणा.....

महाराज की प्रेरणा से, अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी के संकल्प से और आज भगवत् स्वरूप विभूतियों के माध्यम से हमारी श्रद्धा अभी भी मनुष्यजाति में प्रज्जवलित है। अतः हम मानते है कि सभी में सद्बुद्धि प्रगट होकर विजयी होगी।

दिल्ली, पंजाब और उत्तर भारत में हमारे अनेक सत्संगी हैं। इनमें विभिन्न धर्मों में आस्था रखने वाले लोग हैं। उनमें सबमें परस्पर असाधारण सहृदयता है। यह सहृदयता सीमित रहने वाली नहीं है। इसका विस्तार निश्चित है। सीमित दायरा सहृदयता को अपने अन्दर समा नहीं पायेगा। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी का डेढ़ सौ साल पहले किया संकल्प साकार होने में अब अधिक देर नहीं। उन्होंने कहा था ''संसार का पत्ता-पत्ता स्वामिनारायण-स्वामिनारायण बोलेगा''। अर्थात् स्वामिनारायण धर्म का प्रत्येक आश्रित सहज आनंद में, सहज प्रेम में, सहज भाव में रहेगा। दिन प्रतिदिन यह धर्मवृक्ष फल-फूल रहा है। हमें तो बस प्रगट ब्रह्मस्वरूपों के वचनों में, दिव्यता में अपनी अपार श्रद्धा रखनी है। हमें विश्वास है कि अंधकार के–तमोगुण के बादल जल्दी ही छंट जायेंगे और सारा राष्ट्र-सारी मानवजाति पवित्र व समर्थ संतों की आश्रित होकर अक्षरधाम के शाश्वत् सुख, शान्ति और आनंद की ओर अग्रसर होगी। दुःख की साझेदारी करने वाले महाप्रभु भगवान स्वामिनारायण की अमरवाणी है–

''मैं माँगता हूँ कि आपके किसी भक्त को अगर एक बिच्छू का दंश होने वाला हो तो मुझे सौ बिच्छूओं के दंश का दुःख देना। पर आपके भक्त को दुःख मुक्त रखना।'' कैसी भक्तों के प्रति करुणा ! दूसरे के दुःख अपने पर ले लेने की, बाँट लेने की भगवदिय भावना हममें भी प्रगट हो और प्रत्यक्ष स्वरूपों को हम सम्यक् पहचान पायें....यही भगवान स्वामिनारायण व उनके प्रगट स्वरूप प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के चरणों में अन्तर की प्रार्थना.....

☆ ☆ ☆

....और श्रीजी महाराज ने कहा—

11. अपने सत्संग में थोड़ा सा कुसंग का भाग रह जाता है, उसे निकालना है और इस प्रकरण को ऐसा चलाना है कि परमहंस, सांख्ययोगी तथा कर्मयोगी सब सत्संगियों में व्याप्त हो जाये। सत्संग में कुसंग क्या है? बात करने वाले निर्बलता से जो बात करते हैं वह सत्संग में कुसंग है। वे किस प्रकार कहते हैं? वे यूं कहते हैं कि–भगवान के वचन का यथार्थ रूप से कौन पालन कर सकता है? और वर्तमान धर्मव्रतनियमों को भी यथार्थ कौन पाल सकता है? इसलिये जितना धर्मपालन हो सके उतना करो। भगवान तो अधमों का उद्धार करने वाले है, सो वे कल्याण करेंगे। वे यूं भी कहते हैं कि–भगवान के स्वरूप को अपने से तो हृदय में धारण नहीं किया जा सकता है, भगवान ही जिस पर दया करते हैं वहीं धारण कर पाता है। इस प्रकार की थोथी बात करके धर्म, ज्ञान, वैराग्य और भक्ति आदि भगवान की प्रसन्नता के साधनों से दूसरों को निरुत्साहित करते हैं। इसलिये आज से सत्संग में कोई भी ऐसी निर्बलता की बातें न करे। सदा हिम्मत से बात करे। जो इस प्रकार निर्बलता की बात करे उसे नपुंसक समझना चाहिए। जिस दिन ऐसी निर्बल बात हो जाये उस दिन उपवास करना चाहिये।

गढ़डा प्रथम प्रकरण-17
मंगलवार, 6 दिसं. 1819

–क्रमशः

☆ ☆ ☆

स्वामी की बातें

41. कामक्रोधादिक दोष तो शरीर पर उभरने वाले मुंहासे और दाद जैसे हैं। वे तो देह के भाव हैं और टल जायेंगे। बड़े संत यदि कृपादृष्टि करें तो इसी क्षण टल जायें, किन्तु बड़े संत का अवगुण ग्रहण करना (दोष देखना) यह तो क्षय रोग जैसा है।

प्र. 1-165

42. एक तो भगवान की आज्ञा का पालन करना, दूसरा संत का स्वरूप समझना, और तीसरा भगवान का स्वरूप समझना—इन तीन बातों से भगवान प्रसन्न, प्रसन्न और प्रसन्न हैं और उसे धन्य है, धन्य है, धन्य है। ये तीन बातें रखना। प्र. 1-166

43. (दो प्रकार के यज्ञ होते हैं।) एक में घोड़ा सारी पृथ्वी में घूमता है जो बहुत कष्टप्रद है, क्योंकि यदि कोई व्यक्ति घोड़े को बांध दे तो यज्ञ अधूरा रह जाता है। दूसरे प्रकार के यज्ञ में घोड़ा अपने घर के प्रांगण में ही घूमता है। (यह आसान है।) इसी प्रकार इन्द्रियां और अन्तःकरण को वश में करना सारी पृथ्वी में घोड़ा घुमाने जैसा (कष्टप्रद) है, किन्तु अपने आपको ब्रह्मरूप मानना यह प्रांगण में घोड़ा घुमाने जैसा (आसान) है। इसी प्रकार साधु के चौंसठ लक्षण सीखना पृथ्वी में घोड़ा घुमाने जैसा कठिन है और चौंसठ लक्षण वाले साधु के साथ जुड़ जाना—संबंध कर लेना यह प्रांगण में घोड़ा घुमाने जैसा आसान है। प्र. 1-172

44. जब खाली हो—फारिग हो तब भगवान की मूर्ति लेकर बैठिये। मूर्ति अर्थात्—भगवान की कथा, कीर्तन, वार्ता और ध्यान। जहां देह है वहाँ लोभ, काम, क्रोध, स्वाद, स्नेह, मान, निद्रा आदि है ही। इनको देह के साथ ही रखना। अफीम खाने वाले को लगता है कि यह व्यसन सुखद है, किन्तु वास्तव में देह के लिए दुःखप्रद है। इस प्रकार (उपर्युक्त) विषय भी देह को दुःखदायक ही हैं। प्र. 1-174

45. भगवान मिल गये, साधु मिल गये, अब दिल में दुःख नहीं आने देना और प्रारब्ध का आवे वह भोग लेना। प्र. 1-177

46. हम समझते हैं कि हमें भगवान पर प्रीति है, किन्तु भगवान और साधु को हमारे पर इससे कई गुनी अधिक प्रीति है।

प्र. 1-197

47. भजन करना सबसे अधिक है और स्मृति रखनी इससे अधिक है। ध्यान करना इससे भी अधिक है और भगवान को अपनी आत्मा में धारण करना वह तो इससे भी अधिक है। प्र. 1-201

48. सच्चे भगवदी को गुण (सत्त्व, रज और तम) व्याप्त नहीं होता है। वह तो दरवाजे पर खड़े-खड़े—सतर्क होकर (सावधानी से) देखता रहता है। प्र. 1-206

49. अपनी मां, बहन या लड़की को खुले अंग देखते ही सद्गृहस्थ निगाह हटा लेता है, किन्तु देखता नहीं है। इसी प्रकार भगवान अपने आश्रित के दोष नहीं देखते हैं।

प्र. 1-217

50. यह साधु तो भगवान के पास रहने वाला है और भगवान से एख क्षण भी अलग रहे ऐसा नहीं है। यदि अलग रहता है तो जीवों के कल्याण के लिए रहता है। (यह साधु द्वारा) इस समय जो बात होती है वैसी बात जन्मान्तर में भी कोई नहीं कर पायेंगे और करना आयेगा भी नहीं। सारा जन्म अभ्यास करने से भी ऐसी बात करनी सीखी नहीं जाती।

प्र. 1-220

☆☆☆

मनन....निदिध्यासन

* सारे ज्ञान का ज्ञान एक ही है–'भगवत्स्वरूप संत के दिव्य एवं मनुष्य चरित्र–दोनों हमें जंचे दिव्य लगे। भगवत्स्वरूप संत का घूमना-फिरना, खाना-पीना, बोलना-चलना, उपेक्षा करना, अपमान करना, तिरस्कार करना, डांटना.....सब कुछ हमें मीठा लगे, हितकारी लगे, मंगलकारी लगे वही संत का सच्चा स्वीकार है....वही संत से सच्चा संबंध है जीवन में वही सब से बड़ा पुण्य है।'

* भगवत्स्वरूप संत हमें समझाने-मनाने के लिए प्रयत्न करे इससे अधिक कोई पाप नहीं है।

* गुरुदेव को एक ही वचन–एक ही आज्ञा अपने शिष्य को दुबारा करनी पड़े वह शिष्य के लिए सबसे बड़ा पाप है।

–प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी

☆ ☆ ☆

UNIQUE SPIRITUAL DYNAMISM OF LATE SMT. INDIRA GANDHI

Of late Smt. Indira Gandhi, it can be said that she was a leader whose major thinking and action sprang out of a large degree of spiritual good for the mankind not only in India but also in abroad. It was a spiritual consciousness of this great lady which gave her the momentum to draft maximum human response with spiritual equality and the highest degree of tolerance in adverse circumstances as well as in good times.

She felt the pulse of the people of India and knew the meaning of life and to free the people from bondage and four needs of life; thus her whole philosophy of action and quick dicisions were executed with perfet equanimity and spiritual wisdom.

Thus, it will serve today as a light to our courageous new Prime Minister Hon'ble Shri Rajiv Gandhi to receive illumination from the profoundity of its wisdom which insists on a world, wider and deeper than wars and revolutions can touch. It was the most powerful shaping factor in the renewal of spiritual life and has secured and assured the *important place among the world's great* nations. She has thus seem the truth and country's development with globel view in its many sidedness and behind, in saving power. In essence it represented vedic culture as a whole and all religions as such.

The different elements are brought togather and intergrated into a comprehensive synthesis free and large, subtle and profound. Reconciliation and national integration were main thought

currents for her philosophy which marked as Spiritual Dynamism in the spirit of 'friendship, fraternity' forever and for all. she treated secularismof India into an organic unity like other national leaders. She becomes her own masterpiece; her body, mind, and spirit are not dissolved on Himalaya but are rendered pure and become the means and mould of the Divine Light, and her Dynamic Personality is thus raised to its fullness. All her activits were for the holding togather of the majority of the nation to raise peopl's consciousness for a free and happy state of consciousness. The world is to move forward to ideal and to the people by the effort and example as this. It is the work of the natural leader of mankind.

A balanced culture had brought the two great halves into harmony, and the means and ends the human actions and the real happiness are practically linked and jusdiciously reconciled. By Her philosophy of life-she did not advocate fanatical devotion to thepractical and to the disparagement of the dignity of creative thought-i.e.to master the difficulties and riddle of life by positive work and right action. It is derived from her metaphysical realisation. She increased the prestige and glory of India in every respect and out of dire circumstances. She anchred our *ship* to the safe shore-beautifully, successfully and boldly.

Let Almighty omnipotent Supreme Lord Narayan select some persons to make them purest instruments for national intergration, prosperity and world peace. Where there is such a vision people fully flowrish and may God now bless our bold young Prime Minister to shoulder the responsibility of our nation and prove a grand and successful administrator, leader and champion of freedom-for depressed people everywhere.

DADUKAKA'S Jay Swaminarayan

❋ ❋ ❋

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	3.1.85	गुरुवार	पुत्रदा भागवत एकादशी
2. दि.	7.1.85	सोमवार	मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का दीक्षादिन
3. दि.	14.1.85	सोमवार	मकरसंक्रान्ति
4. दि.	17.1.85	गुरुवार	ब्र.स्व.स्वामिश्री योगीजी महाराज का निर्वाणदिन
5. दि.	26.1.85	शनिवार	वसंतपंचमी, श्री शिक्षापत्री जयंती, ब्र.स्व. स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्य दिन
6. दि.	30.1.85	बुधवार	नौमी, श्री हरिजयंती
7. दि.	1.2.85	शुक्रवार	जया एकादशी
8. दि.	3.2.85	रविवार	प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन
9. दि.	10.2.85	रविवार	प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन निमित्त दिल्ली में उत्सव

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashokvihar-III, Delhi-110 052. India, Tel. 712883
Printed at R.P., Printers, shahadra, Delhi-110 032